दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 61* ❑ *अंक-21* ❑ *दिल्ली* ❑ *अगस्त (प्रथम) 2023* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की 39वीं वर्षगांठ पर हार्दिक बधाइयां

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना दिवस की 39वीं सालगिरह पर अकादमी के पदाधिकारियों, अकादमी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय–राष्ट्रीय व अन्य सम्मानों से सम्मानित साहित्यकारों, कलाकारों, समाजसेवकों को हार्दिक बधाई। आज से 39 साल पूर्व 6 अगस्त, 1984 को तत्कालीन उप–प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम जी के द्वारा नई दिल्ली में भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना हुई थी और उसके संचालन और उसके देश–विदेश तक प्रसार व प्रसार करने का भार डा. सोहनपाल सुमनाक्षर को अकादमी का अध्यक्ष बनाकर सौंपा था, तब से आज तक अकादमी उनकी आशाओं और आकांक्षाओं पर पूरी तरह से खरी उतरी है और बाबूजी ने डा. सुमनाक्षर के प्रति जो विश्वास और आशा जताई थी, उस पर भी डा. सुमनाक्षर पूरी तरह खरे उतरे हैं। बिना किसी सरकारी सहायता या अनुदान या अनुकम्पा के उन्होंने अकादमी की नाव को बड़ी अच्छी तरह से खैव कर देश के 'हर घर हर नर' तक ही नहीं पहुंचाया है बल्कि विदेशों तक में भी विश्व दलित साहित्यकार सम्मेलन करके अकादमी व दलित साहित्य के नाम को आगे बढ़ाया है। यह उनकी निष्ठा, लगन और त्याग का ही कमाल है जो किसी अजूबा से कम नहीं है जबकि इस अन्तराल में कितनी ही राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें बनीं, कुछ दिन चली, पर आज उनका नामोनिशान कहीं नजर नहीं आता।

ऐसा नहीं है कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी को आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ा हो, या फिर इस पर राजनीतिक सत्ता के प्रचार का आरोप न लगा हो, या फिर इस पर डा. सुमनाक्षर के एकाधिकार या पारिवारिक लोगों द्वारा अकादमी के पदाधिकारियों

(शेष पृष्ठ 6 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना की घोषणा करते हुए बाबू जगजीवन राम। मंच में उनके साथ हैं नेपाल के दलित नेता श्री टी.आर. विश्वकर्मा, डा. सोहनपाल सुमनाक्षर, श्रीमती मिठाई देवी विश्वकर्मा, श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर।

सम्पादकीय

अकादमी, दलित साहित्य और उसके अवरोधक

• डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना 6 अगस्त, 1984 को पूर्व–उपप्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम जी के द्वारा नई दिल्ली के कान्स्टीच्यूशन क्लब में हुई थी। इस अवसर पर नेपाल राष्ट्र के दलित नेता श्री टी.आर. विश्वकर्मा अपने नेपाली शिष्टमण्डल के साथ उपस्थित थे जिन्होंने बाबू जी द्वारा अकादमी की स्थापना का स्वागत करते हुए कहा कि नेपाल और भारत के दलित वर्ण व्यवस्था और जातपांत के कारण छुआछूत–भेदभाव के शिकार हैं। दोनों ही तथाकथित सवर्ण हिन्दुओं की प्रताड़ना, दमन, शोषण, अन्याय, व्यभिचार के अमानवीय व्यवहार से पीड़ित हैं। अकादमी वर्ण व्यवस्था, जातिगत भेदभाव और दुराचार का दलित साहित्य द्वारा भंडाफोड़ करके समाज में दलितों को समता, सम्मान, भाईचारा, न्याय दिलाने का कार्य करेगी जिससे सदियों से शिक्षा, सत्ता, धन–सम्पदा से वंचित दलित–अछूतों को समाज में सम्मान मिलने पर वे भी स्वाभिमान से सिर ऊंचा करके जी सकेंगे।

श्री टी.आर. विश्वकर्मा ने कहा कि बाबू जी ने अकादमी की मशाल डा. सोहनपाल सुमनाक्षर को सौंपने की जो आशा व्यक्त की है, हम डा. सुमनाक्षर जी को आशीर्वाद देते हैं कि वे अकादमी को देश–विदेश में आगे बढ़ाने में सफल होंगे और दलित साहित्य के माध्यम से समता, स्वतंत्रता, बन्धुता की रोशनी चहुंओर फैलायेंगे। बाबू जी का मार्गदर्शन और आशीर्वाद उनके साथ है, इसलिए अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में वे अकादमी को राष्ट्रीय से अन्तर्राष्ट्रीय बनाने में सफल होंगे। बाबू जी ने इस अवसर पर सामाजिक भेदभाव पर अपना ऐतिहासिक भाषण देते हुए आशा व्यक्त की कि अकादमी एक नया प्रकाश लेकर आयेगा और वेद–शास्त्रों व हिन्दू साहित्य में दलितों का जो गौरवपूर्ण इतिहास झांक रहा है, उसकी बिखरी कड़ियों को जोड़कर दलितों के गौरवमयी, पराक्रमी इतिहास को उजागर करने में सफल होगा।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के इस प्रथम सम्मेलन में दलित साहित्य की अवधारणा, उसका उद्देश्य, उसकी सीमायें और उसके कार्यक्रमों पर विचार करने के बाद भारत के विभिन्न राज्यों में अकादमी की राज्य शाखा और प्रदेश–अध्यक्षों की घोषणा करते हुए उसकी शाखायें जिला–तहसील–ब्लाक स्तर तक स्थापित करने के प्रस्ताव दिये गये।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के इस प्रथम सम्मेलन में देश–विदेश के पांच सौ से ज्यादा महानुभावों ने भाग लिया। सबने अकादमी की स्थापना और दलित साहित्य के प्रादुर्भाव पर खुशी जाहिर की। डा. सुमनाक्षर के नेतृत्व व अध्यक्षता में 1985, 1986, 1987 के चार राष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए और पूरे देश के सभी प्रदेशों में अकादमी की राज्य शाखाओं से आगे जिला स्तर तक उसकी शाखायें स्थापित हो गई और 'दलित साहित्य' की अवधारणा का नाम व काम ने समाज से आगे बढ़कर शिक्षण–संस्थाओं में भी अपनी 'दस्तक' देनी शुरू की। दलित साहित्य के परचम के

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

मो. 9810278936, 9891989175

सम्पादकीय का शेष....अकादमी, दलित साहित्य और उसके अवरोधक

नीचे लेख, कहानी, कविता, आत्मकथा, लघुकथा लिखी जाने लगीं। राष्ट्रीय, प्रदेश, जिला और तहसील स्तर पर दलित साहित्य सम्मेलन, साहित्यिक गोष्ठियां, परिचर्चा, दलित कवि सम्मेलन धड़ल्ले से होने लगे। इससे प्रकाशकों का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने दलित साहित्य प्रचुर मात्रा में छापना शुरू किया। इससे दलित लेखकों और दलित साहित्यकारों की मांग व सम्मान बढ़ा ओर उनकी रचनायें आदर के साथ प्रकाशित की जाने लगीं। कालेज–विश्वविद्यालयों में प्रचुर मात्रा में दलित साहित्य उपलब्ध होने पर उस पर एम.फिल., पीएच. डी. उपाधियों के लिए शोध कराया जाने लगा। इससे भारतीय दलित साहित्य अकादमी का नाम वैश्विक स्तर पर उभरने लगा और दलित साहित्य को शिक्षण संस्थानों में स्वीकारा जाने लगा। अभी तक जो लोग यह सोचकर चुप बैठे थे कि कितनी ही सामाजिक, शैक्षणिक संस्थायें यहां बनीं, स्थापित हुई और कुछ दिनों के बाद वे पास्परिक लड़ाई–झगड़े की शिकार होकर खत्म हो गई या बिना निष्ठा व कार्यक्रमों के मृतप्राय हो गईं। इसलिए वे सोचते थे कि जैसे बाबू जगजीवन राम जी की भारतीय दलित वर्ग संघ व श्री योगेन्द्र मकवाना, केन्द्रीय राज्य गृहमंत्री की संस्था अखिल भारतीय अनुसूचित परिषद् राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित होते हुए भी वे निष्ठावान कार्यकताओं की कमी के कारण खत्म हो गईं और आज उनका कोई नाम नहीं जानता। वैसे ही कुछ दिनों के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी के साथ होगा और वह भी कुछ दिनों के बाद खत्म हो जायेगी और उसके द्वारा प्रतिवादित 'दलित साहित्य' सवर्ण–हिन्दू साहित्य के सामने परास्त होकर विलोपित हो जायेगा, पर यह उनकी सोच को झूठलाकर फलता–फुलता नजर आया।

अकादमी का पांचवां राष्ट्रीय सम्मेलन, नई दिल्ली के हिमाचल भवन में आयोजित किया गया। सम्मेलन का सभागार खचाखच भरा था, 5 हजार के लगभग प्रतिनिधि देश–विदेश से भाग लेने इस सम्मेलन में पधारे थे। उनमें नेपाल, भूटान, श्रीलंका, इंगलैण्ड, अमेरिका, कनाडा आदि विदेशों के प्रतिनिधि अपने–अपने देश की वेशभूषा में उपस्थित थे, जो एकता, भाईचारा, समता व सम्मान का सन्देश लेकर आये थे।

इस सम्मेलन में भारत के उप–राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा मुख्य अतिथि थे। देश के केन्द्रीय गृहमंत्री डा. बूटा सिंह, केन्द्रीय आवास मंत्री चौ. दलबीर सिंह, केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मंत्री श्री एच.के.एल. भगत, दिल्ली के मुख्य मंत्री श्री जगप्रवेश चन्द्र विशिष्ठ अतिथि थे। इसके अलावा नेपाल के दलित नेता श्री टी.आर. विश्वकर्मा अपने प्रतिनिधि मण्डल के साथ सम्मेलन में शोभायमान थे। अनेक सांसद व विशिष्ठ साहित्यकार भी सम्मेलन में अपनी उपस्थिति से शोभा बढ़ा रहे थे। सम्मेलन में उप–राष्ट्रपति का उद्‌बोधन दलित साहित्यकारों के लिए प्रेरणादायक और उत्साहवर्धक था। उन्होंने दलित साहित्य को मानवता के लिए पूरे विश्व में फैलने की कामना की। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री बूटा सिंह ने दलितोत्थान के लिए दलित साहित्य की अनिवार्यता पर जोर दिया।

इस सम्मेलन में केन्द्रीय आवास मंत्री चौ. दलबीर सिंह ने अकादमी भवन के लिए दिल्ली में जमीन देने की घोषणा की। वहीं दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री जगप्रवेश चन्द्र ने दिल्ली सरकार की ओर से २ लाख रुपए की सहायता अकादमी को दिये जाने की घोषणा की।

श्री टी.आर. विश्वकर्मा ने अकादमी का पहला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन नेपाल में किये जाने की घोषणा की। अकादमी के इस बढ़ते कदम से सभी प्रतिनिधि खुश थे, पर जो लोग एक–दो साल में अकादमी के खत्म हो जाने की बात करते थे इस सम्मेलन की सफलता को देखकर उनके दिलों पर सांप लौटने लगा क्योंकि अकादमी में कोई उन्हें तव्वाजो देने वाला नहीं था, इसलिए अब उन्होंने अकादमी को बदनाम करने के लिए समाचार पत्रों का सहारा लेना शुरू किया।

नवभारत टाइम्स के 26–12–1988 के अंक में सर्वप्रथम किन्हीं वत्सदानन्द 'विनीत' का पत्र छपा जिसका शीर्षक था–

क्या साहित्यकार भी दलित होता है?

राजधानी में पिछले दिनों दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में दलित साहित्यकारों को गृह मंत्री बूटासिंह के हाथों पुरस्कृत कराया गया। अभी तक तो साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी अकादमियों के नाम सुने थे। लेकिन अब दलित साहित्य अकादमी सुनकर लगा कि अब वह दिन दूर नहीं जब सवर्ण साहित्य अकादमी, जन साहित्य अकादमी, वैश्य साहित्य अकादमी यानी हर जाति की अपनी अकादमियां देखने–सुनने को मिलेंगी।

सुना था साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार समाज का मार्गदर्शक है। सदैव साहित्य और साहित्यकार की ही चर्चा समाज, स्वदेश और विदेश में होती रही है। कभी भी किसी पाठक ने यह जिज्ञासा प्रकट नहीं कि मुंशी प्रेमचन्द दलित थे या सवर्ण किसी भी पाठक ने आज

तक साहित्य और साहित्यकार की जातियों में कैद करने का साहस नहीं किया, क्योंकि साहित्यकार धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय से कहीं ऊपर होता है। साहित्यकार से कोई उसकी जात नहीं पूछता। वास्ता है तो उसके रचित साहित्य से, लेकिन धन्य हैं दलित साहित्य अकादमी के कर्णधार जिन्होंने साहित्य और साहित्यकारों को दलित की कोटि में खड़ा करवाकर उन्हें ही डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार दिला दिया।

– वत्सदानंद 'विनीत'
जी–97, सरोजिनी नगर, दिल्ली

इस पत्र के नवभारत टाइम्स में छपते ही, इसके विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया हुई और लोगों ने अकादमी व दलित साहित्य के पक्ष में पत्र लिख भेजे जो नवभारत टाइम्स में 12-1-1989 के अंक में प्रकाशित हुए हैं–

दलित हैं तो दलित साहित्यकार भी होंगे

26 दिसम्बर के नभाटा में वत्सदानंद 'विनीत' का पत्र 'क्या साहित्यकार भी दलित होता है?' पढ़कर आश्चर्य हुआ। भारतीय दलित साहित्य अकादमी के सराहनीय कार्यों को जातिवाद के चश्मे से देखनेवाले श्री 'विनीत' स्वयं किस कद्र धर्म और जाति की दीवारों के बीच कैद हैं? यदि भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने सदियों से दबे–पिछड़े उपेक्षित दलितों को महामानव डा. भीमराव अम्बेडकर के नाम पर पुरस्कार प्रदान करने की परम्परा प्रारम्भ कर दी तो 'विनीत' जैसे लोगों को क्यों ईर्ष्या होने लगी? क्या वे नहीं चाहते कि दलित भी किसी साहित्यिक मंच पर एकत्रित हों? अपने हित एवं अधिकारों के लिए साहित्यिक लड़ाई लड़ें?

– धनदेवी, खिचड़ीपुर, दिल्ली

.....

26 दिसम्बर के नभाटा में 'क्या साहित्यकार भी दलित होता है?' शीर्षक पत्र के सम्बन्ध में मैं इतना ही कहूंगा कि वत्सदानंद 'विनीत' ने दलित साहित्य की परिभाषा शायद नहीं पढ़ी, या इस साहित्य आन्दोलन के प्रारंभ से अनभिज्ञ हैं। 'धम्मपद' के बालवग्ग में वर्णित बातें ही पत्रलेखक वत्सदानन्द पर लागू होती हैं।

दलित साहित्य की कसौटी पर मुंशी प्रेमचन्द को ज्येष्ठ दलित साहित्यकार भ्राता के रूप में स्वीकारा जाता है क्योंकि उस समाज को उन्होंने उसके वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया। कबीर को पहला दलित साहित्यकार माना जाना चाहिए।

ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। फिर क्यों इस देश में हिन्दू युनिवर्सिटी और मुस्लिम युनिवर्सिटी या जामिया मिल्लिया इस्लामिया विद्यमान हैं? इस तरह की विषैली बुनियाद को हमने क्यों बर्दाश्त किया? मैं समझता हूं कि दलित साहित्य इन सब बातों का पर्दाफाश करता है और सभी आडम्बरों से मानवमात्र को मुक्त कर उसे समता, आजादी, भाईचारे और न्याय के मूल्यों का पाठ पढ़ाना चाहता है।

– शेखर, विश्वास नगर,
शाहदरा, दिल्ली

नभाटा (26 दिसम्बर) में वत्सदानन्द 'विनीत' ने साहित्य और साहित्यकार को दलित कहने पर आपत्ति प्रकट की है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना तथा उसके द्वारा लब्ध–प्रतिष्ठित दलित साहित्यकारों को सम्मानित करना शायद उन्हें सुखद नहीं लगा। कितने आश्चर्य की बात है कि श्री 'विनीत' अभी तक 'दलित साहित्य' एवं 'दलित साहित्यकार' की परिभाषा से अवगत नहीं है। उनकी जानकारी के लिए वस्तुतः वह साहित्य जो किसी भी दलित अथवा सवर्ण लेखक द्वारा दलितों से संबद्ध विषयों पर केवल दलितोत्थान के लिए लिखा जाता है, 'दलित साहित्य' कहलाता है तथा ऐसे लेखकों को 'दलित साहित्यकार' की संज्ञा दी जाती है।

अभी तक दलितों पर उनकी पीड़ा एवं समस्याओं को शब्दांकित करने के लिए, उनके विकास एवं उत्थान की दृष्टि से भी जो साहित्य लिखा गया, उसके संकलन एवं प्रकाशन का कार्य अधूरा पड़ा था। दलित साहित्य–साहित्यकार व दलितों का इतिहास अभी तक संकीर्ण, कुत्सित, जातिगत मानसिकता के गर्भ में दबा पड़ा था जिसे प्रकाश में लाना अत्यावश्यक समझा गया। सैकड़ों दलित लेखक, पत्रकार, साहित्यकार व कलाकार समूचे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरे पड़े थे। उन्हें एक मंच पर एकत्र करने की महत्ती आवश्यकता थी। दलित साहित्य को किसी सरकार अथवा साहित्यिक संस्था द्वारा सम्मानित करने का साहस कभी किसी ने नहीं किया। नेहरू, इन्दिरा गांधी के नाम पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार दिए जाते रहे लेकिन दलितों के मसीहा भारतीय संविधान के जनक बाबासाहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के नाम पर डा. अम्बेडकर पुरस्कार प्रदान करने की शुरुआत किसी ने नहीं की।

सभी जानते हैं कि कवि सम्मेलनों, राष्ट्रीय विषयों पर परिचर्चाओं एवं विचारगोष्ठियों में कितने दलित लेखकों, वक्ताओं, साहित्यकारों, समीक्षकों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। उनकी इस घोर उपेक्षा को दृष्टि में रखते हुए भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना एक अत्यावश्यक तथा अनिवार्य कदम था। अकादमी ने गत तीन वर्षों में समय–समय पर कवि सम्मेलनों, परिचर्चाओं, विचार गोष्ठियों, व्याख्यानमाला तथा चार राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलनों का नितांत गरिमापूर्ण ढंग से आयोजन कर साहित्य जगत एवं सरकार की दृष्टि में अपनी एक अहम् छवि

स्थापित कर ली है।

दिल्ली प्रशासन द्वारा अकादमी को भेंट स्वरूप एक लाख रुपए प्रदान करने तथा गृहमंत्री द्वारा अकादमी के भवन निर्माण के लिए स्थान उपलब्ध कराने व उसका निर्माण कराने की घोषणा भी की गई है।

– आनन्द स्वरूप, अध्यक्ष,
भारतीय दलित साहित्य अकादमी
दिल्ली प्रदेश

.....

26 दिसम्बर के नभाटा में 'क्या साहित्यकार भी दलित होता है?' शीर्षक से वत्सदानंद 'विनीत' का पत्र पढ़ा। विनीत जी ने इस पत्र में 'दलित साहित्यकार' शब्द पर मजाक रूपी आश्चर्य प्रकट किया है।

'दलित साहित्य अकादमी' कोई नवनिर्मित अकादमी नहीं है। यह अकादमी कई वर्षों से डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार देती आ रही है और अब अन्तर्राष्ट्रीय अम्बेडकर पुरस्कार भी अकादमी द्वारा दिया जा रहा हैं

दलित साहित्यकार होने के लिए दलित वर्ग का होना जरूरी नहीं है। यदि ऐसा होता तो महाराष्ट्र में लिखा जा रहा दलित साहित्य गैर–दलित लोगों के प्रयास से न लिखा जाता। मराठी में जो भी दलित साहित्य लिखा जा रहा है, उसको लिखनेवाले अधिकांश गैर–दलित हैं। क्या वे दलित साहित्यकार नहीं हैं? वास्तव में दलित साहित्यकार वही है जो दलितों के बारे में सोचता है, लिखता है, उसकी पीड़ा को शब्दों के माध्यम से कागज पर उतारता है।

– सुन्दर लाल, जाटव नगर,
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

.....

वत्सदानंद 'विनीत' द्वारा प्रकट किए गए विचारों से उनकी अल्पबौद्धिकता झलकती है। पिछले तीन वर्षों में दलित वर्ग के ही नहीं, बल्कि सवर्ण हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी धर्मों के लेखक, साहित्यकार, पत्रकार व कलाकार हजारों की संख्या में इस अकादमी से जुड़े हैं जो अपने–आपमें अकादमी की लोकप्रियता का अकाट्य प्रभाव है।

गौरव का विषय है कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने बहुत थोड़े समय में ही अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली हैं आज उसके महत्व को न केवल भारत के जाने–माने बुद्धिजीवियों तथा साहित्यकारों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आंका जाने लगा है, बल्कि विश्वपटल पर भी उसे सराहा गया है। इस अकादमी का भविष्य उज्ज्वल है।

– अमरीश सिंह गौतम, अध्यक्ष
बहुजन विकास संघर्ष, दिल्ली

अकादमी और दलित साहित्य के विरोधियों को डा. सुमनाक्षर का खुला पत्र

26 दिसम्बर, 1988 के नवभारत टाइम्स में चिट्ठियों के अन्तर्गत प्रकाशित 'क्या साहित्यकार भी दलित होता है?' पत्र पढ़ा। इसे पढ़कर लगा कि लेखक को शायद साहित्य का ज्ञान नहीं है और न ही वह भारतीय समाज से जुड़ा हुआ है अन्यथा उसे ऐसे प्रश्न उठाने की शायद आवश्यकता ही नहीं पड़ती। लेखक साहित्य से बिल्कुल अनभिज्ञ है। उसे पता ही नहीं की आज भी साहित्य क्षेत्र में अश्लील साहित्य, ललित साहित्य, सन्त साहित्य, प्रगतिशील साहित्य, जनवादी साहित्य नामों से 'साहित्य' की पहचान होती है। साहित्य की इसी विशिष्ठ श्रेणी में 'दलित साहित्य' भी आता है। इसकी शुरुआत बाबा साहब डा. बी.आर. अम्बेडकर ने 31 जनवरी, 1920 को अपने समाचार पत्र 'मूकनायक' के प्रकाशन से की थी। उसके पश्चात् 'दलित साहित्य' ने महाराष्ट्र व गुजरात में अपने पांव जमाये और अब वह दक्षिण भारत में छा जाने के बाद उत्तर भारत में लहलाने लगा है इसलिए लेखक को कूप मंडूकता छोड़कर अन्य प्रदेशों के साहित्य का भी अध्ययन करना चाहिए।

हमें लगता है कि पत्र लेखक को भाषा व व्याकरण का ज्ञान नहीं है। दलित साहित्य का सीधा सा स्पष्ट अर्थ है–'दलितोत्थान साहित्य' और जो 'दलितोत्थान साहित्य का सृजन कर रहे हैं–वही हैं 'दलित साहित्यकार'। अब यह अपना–अपना दृष्टिकोण और मानसिकता है कि आप किस चीज को किस नजरिये से देखते हैं। हमारे अनुसार जो भी व्यक्ति दलितोत्थान हेतु साहित्य–सृजन कर रहा है वह दलित साहित्यकार है। हमारा मूल्यांकन तथा मापदंड का किसी व्यक्ति का कृतित्व व साहित्य सृजन है, उसका 'जन्म' नहीं। तभी तो इस क्षेत्र में विशिष्ठ साहित्य सृजन करने हेतु अकादमी ने पं. वियोगी हरि, श्री वी.टी. राजशेखर, वानखेड़े गुरु जी को 'डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार' देकर सम्मानित किया।

हमें लगता है कि लेखक को भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत व सम्मानित करना अच्छा नहीं लगता। क्योंकि इसे वे सिर्फ ब्राह्मणों का ही अधिकार मानते हैं। भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना के पीछे निम्नलिखित तीन मुख्य उद्देश्य हैं–

1. जनहित विरोधी ब्राह्मणवादी साहित्य का अनुशीलन और सत्यता उजागर करना।

2. दलितों के विकृत, लुप्त और उपेक्षित इतिहास की खोज।

3. देश के दलित, शोषित, उपेक्षित और असहाय लोगों के उत्थान हेतु साहित्य सृजन।

लेखक ने लिखा है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार समाज का मार्गदर्शक है। हम उनकी इस बात से सहमत हैं पर प्राचीन काल से ही साहित्य तो ब्राह्मणवाद की बपौती रहा है।

सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य को उठा लीजिए। समस्त ब्राह्मण और उच्च वर्ण के वर्चस्व और यशोगान से पूरित नजर आएगा। वही प्रतिछाया हमें हिन्दी साहित्य में स्पष्ट नजर आती है। वहां राजाओं की स्तुति मिल जाएगी, महलों में गूंजती पायल और घुंघरूओं की आवाज छनकती सुनाई दे जाएगी, पर वहां भी उन दीन दुखियों की चीत्कार, उत्पीड़न, आह आपको नजर नहीं आएगी जिन्हें सदियों से पशुओं से बदतर जीवन जीने पर मजबूर किया गया, बन्धुआ बनाकर अमानुषिक अत्याचार किए गए, जूठन खाने, उतरन पहनने, नंगे गांव से बाहर रहने को बाध्य किया गया। क्या ये समाज के अंग नहीं थे? फिर साहित्य–दर्पण में उनकी प्रतिछाया प्रलक्षित क्यों नहीं हुई? अपने को साहित्यकार कहने वालों की लेखनी इस ओर क्यों नहीं गयी? स्पष्ट है ब्राह्मणवादी व्यवस्था से वे बंधे थे, इसलिए सच्चाई को पग–पग पर उन्होंने नक्कारा। ऐसी स्थिति में 'साहित्य' और 'साहित्यकार' को जातियों में किसने कैद करके रखा, सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

साहित्यकार से कोई उसकी जात नहीं पूछता, ठीक है, पर साहित्यकार के नाम को उसकी साहित्य की अपेक्षा ज्यादा जांचा जाता है। जिस समाज में नाम, पहनावा और रहन–सहन के लिए नियम निर्धारित हों, वहां कोई भी उच्च योग्यता न्याय की आशा नहीं कर सकती? क्या साहित्य अकादमी, हिन्दी अकादमी, ज्ञानपीठ की पुरस्कार तुला पर सारे देश में से एक भी ऐसा दलित साहित्यकार नहीं है जो ठीक बैठता और जिसे सम्मानित किया जाता?

डा. श्याम सिंह 'शशि', डा. धर्मवीर, डा. एस.एल. धनी, डा. डी.आर. जाटव, डा. सुखदेव सिंह, डा. गंगाधर पानतावणे, डा. (श्रीमती) कुसुम मेघवाल ऐसे हस्ताक्षर हैं जो किसी भी वरिष्ठ साहित्यकार की तुलना में कम नहीं बैठते। पर जहां योग्यता व ज्ञान की जांच ब्राह्मणवादी दृष्टि हो, वहां 'दलित' शब्द से ही नाक मुंह सिकोड़ने वाले लोगों को 'दलित साहित्यकार' कैसे सिर चढ़ सकते हैं?

ऐसी स्थिति में ऐसे उपेक्षित दलित साहित्यकारों को भारतीय दलित साहित्य अकादमी से पुरस्कृत व सम्मानित करना भी उन्हें अच्छा नहीं लगा। लगता है कि वे ब्राह्मणों की तरह 'आशीर्वाद' देने का अपना पुरातन अधिकार आज भी आरक्षित रखना चाहते हैं। भारतीय दलित साहित्य अकादमी ऐसी 'दलित मानसिकतों को परिवर्तित करने के लिए कृतसंकल्प है। समाज की गली–सड़ी व्यवस्थाओं को स्वयं टूटना होगा वरना दलित साहित्यकार उन्हें अब समूल नष्ट करके ही दम लेंगे।

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष
भारतीय दलित साहित्य अकादमी
15-1-1989

पृष्ठ 1 का शेष... भारतीय दलित साहित्य अकादमी की 39वीं वर्षगांठ पर हार्दिक बधाइयां

के बीच फूट डालने का प्रयास नहीं किया गया हो। यह सब पिछले 39 सालों में अकादमी के साथ हुआ, पर अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर और उनके टीम के पदाधिकारियों के पास्परिक विश्वास, कर्त्तव्य निष्ठा, और निःस्वार्थ भावना के सामने अकादमी के विरोधी धराशाही हो गये, या तो वे चुप्पी साध गये या फिर समाज के लोगों के सामने अपनी छवि ठीक बनाने में वे अकादमी से नये सिरे से जुड़ गये और अकादमी के दलित साहित्य कारवां को आगे बढ़ाने में सहयोग करके वाहवाही लूटने लगे। अकादमी का दलित साहित्य वट वृक्ष इतना बड़ा होकर देश–विदेश तक फैल गया है कि आज हर कोई अकादमी से जुड़कर अपने को 'दलित साहित्यकार' कहलाने के लिए लालायित है।

देश में हजारों सालों से सम्मान की लड़ाई चलती रही है। मनुस्मृति की वर्ण व्यवस्था व जातिवाद ने समाज में लोगों को 6 हजार से ज्यादा जाति–उपजातियां से बांट दिया। इसमें तीन वर्णों के लोगों को सवर्ण बताकर उन्हें सत्ता–धन, सम्पदा, शिक्षा के सभी अधिकार दिये और उन्हें पूजनीय और सम्मान का अधिकारी करार दिया गया। दूसरी ओर वर्ण व्यवस्था के अन्तिम पायदान या छोर पर 'शूद्र' वर्ग को रखा, जिसको सत्ता, धन, सम्पदा, शिक्षा से वंचित रखा गया और उसे दास, दस्यु, अछूत, बहिष्कृत, नीच, अस्पृश्य घोषित कर समाज के ऊपर के तीन वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य) की सेवा के साथ बांध ा दिया गया। और उनके लिए अपने उन मालिकों की जूठन खाने, उतरन पहनने, नीचे धरती पर पुलाव बिछाकर सोने का अपने शास्त्रों में प्रावधान किया। अपने इस अमानवीय व्यवहार को उन्होंने भाग्य–भगवान, धर्म–कर्म, स्वर्ग–नरक व पूर्व जन्म के कार्यों के परिणाम मानकर स्वीकार कर लिया और गौरव महसूस करता है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलित साहित्य के माध्यम से मनुस्मृति की इस वर्ण व्यवस्था का खुलकर विरोध किया और जिन लोगों को सदियों से अपमान, अन्याय, उत्पीड़न, बेइज्जती

हिमायती
7 / अगस्त (प्रथम) 2023 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 31 जुलाई, 2023

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

झेलनी पड़ी थी, उनको सम्मान देना प्रारम्भ किया। बाबा साहब डा. अम्बेडकर के लिखित साहित्य के अलावा अपने महापुरुषों, ध र्मगुरुओं के समतावादी लोकतांत्रिक साहित्य को दलित साहित्य के अन्तर्गत प्रकाशित कर हर घर–हर नर तक प्रचारित किया। इन सबका प्रभाव आज हम समाज में दलितों के अन्दर आई जनचेतना, स्वाभिमान और सामाजिक परिवर्तन में देख रहे हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी को गत 39 सालों में शुरू से ही ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था के पोषकों के अवरोधों का सामना करना पड़ा। वे नहीं चाहते थे कि कोई उनकी बनाई वर्ण–व्यवस्था और जातिवाद के खिलाफ बोले, उनके विरोध में दलित साहित्य की रचना करे, या उनके ब्राह्मणवादी असमानता पर आधारित साहित्य का विरोध करे, और जिन लोगों को अब तक 'अपनी पैर की जूती' मानकर उनके साथ दुर्व्यवहार, उत्पीड़न, अन्याय, बेइज्जत करने वालों के विरुद्ध चेतना जागृत करके भारतीय संविधान के नाम पर उनमें समान अधिकार और सम्मान की भावना जगाये। इसलिए अखबारों में अकादमी के जनचेतना कार्यों की आलोचनाओं के साथ अकादमी को राजनीतिक संस्था बताकर बदनाम करना शुरू किया। ब्राह्मणवादी लेखकों और साहित्यकारों द्वारा क्रमबद्ध तरीके से अकादमी और दलित साहित्य के खिलाफ यह आन्दोलन शुरू किया। हम पहले से यह जानते थे कि अकादमी की स्थापना के साथ ही दलित साहित्य के अभ्युदय व आर्विभाव से विचलित होकर ये ब्राह्मणवादी, मनुस्मृति की वर्ण–व्यवस्था के पोषक हमारा विरोध जरूर शुरू करेंगे। हमने भी उनके विरोध का हर सम्भव उत्तर देने के लिए पहले से ही कमर कस ली थी कि हमें उनकी परवाह न करके अपने दलित साहित्य अभियान को निरन्तर आगे बढ़ाना है। समाचार पत्रों में अकादमी की ओर से उनका करारा जवाब दिया गया। इसका सकारात्मक लाभ अकादमी को हुआ। एक ओर भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अखबारों में निरन्तर नाम छपने से लोग इसके विषय में जानने के लिए उत्सुक हुए। दूसरे 'दलित साहित्य' का विरोध होने पर लोगों में दलित–साहित्य के विषय में जानने की जिज्ञासा पैदा हुई कि दलित साहित्य क्या है और इसका विरोध क्यों हो रहा है? जो समाचार पत्र अकादमी के कार्यक्रमों को छापने के इच्छुक नहीं थे, वो ही अब उस पर बड़े–बड़े लेख छाप रहे थे। उन विरोधियों ने ही 'अकादमी' के नाम व काम को देश–विदेश में गूंजा दिया। •

नवभारत टाइम्स 3 सितम्बर, 1987

• मोहनदास नैमिश्राय

दलित साहित्य के बहाने राजनीतिक दुकानदारी

आज से दो दशक पूर्व मराठी दलित लेखक एवं साहित्यकारों की पहल द्वारा दलित समाज की अस्मिता तथा अस्तित्व के संदर्भ में साहित्य जगत में दलित साहित्य की पहचान बनी थी। पर वही पहचान धीरे–धीरे राजनीति के बियाबान जंगल में गुम होती चली गई। दलित साहित्यकार का रुझान सृजनात्मक लेखन से हटकर राजनीति की ओर अधिक होने लगा। ऐसा ही एक प्रयास हुआ 8 और 9 अगस्त को दिल्ली स्थित भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में हुए दलित साहित्यकारों के तीसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में। इस समारोह में देश भर के पाँच सौ के करीब दलित लेखक, साहित्यकार एवं पत्र–पत्रिका संपादकों ने भाग लिया।

यूं भारतीय दलित साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर के अनुसार उक्त सम्मेलन बुलाने का विशेष प्रयोजन था समाज के दलित, शोषित, असहाय और निर्बलजनों के उत्थान हेतु साहित्य सृजन एवं प्रकाशन की व्यवस्था के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक तौर पर उनके जीवन स्तर को ऊंचा उठाना तथा साहित्य द्वारा वैचारिक क्रांति पैदा करना। पर 8 अगस्त का हिमाचल भवन में सम्मेलन की शुरुआत एवं उद्घाटन समारोह कुछ इस तरह से हुए कि साहित्यकता को तो एक कोने में ले जाकर छोड़ दिया गया और शुरू से आखिर तक के कार्यक्रमों पर राजनीति पूर्ण रूप से हावी हो गई। सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री एच.के.एल. भगत को बुलाया गया। वैसे भगतजी का साहित्य से लेशमात्र भी रिश्ता नहीं है पर अकादमी के अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर से उनका राजनैतिक रिश्ता अवश्य है। डा. सुमनाक्षर नगर निगम पार्षद रहते हुए सत्ता का सुख भोग चुके हैं। अब पुनः भोगना चाहते हैं। देश भर से साहित्यकारों को यह कहकर बुलाया गया था कि उनकी आवाज को बल मिलेगा। पर इसी बल और एक दल के वर्चस्व को सम्मेलन में भुनाने की पूरी–पूरी कोशिश की गई। अपने कमाण्डो अंगरक्षकों द्वारा पूर्णरूप से सुरक्षित भगतजी ने बदलते हुए राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में दलितों की भूमिका के बारे में उद्बोधन दिया। इंदिरा जी की हत्या और विदेशी षड्यंत्र की बात दोहराई गई। देश पर आए संकट के समय दलित समाज ने

भरपूर साथ दिया है और आगे भी वे राजीव सरकार को मजबूत करेंगे, इस बात को बल देकर बार–बार कहा गया।

कुछ वर्षों से राजनीति में संदिग्ध रूप से चर्चित रहे भगत जी के चालीस पचास मिनट के भाषण का आशय यही रहा कि आने वाले लोकसभा के चुनाव में सभी दलित समाज के बुद्धिजीवियों को राजीव कांग्रेस को ही अपना समर्थन देना चाहिए। दूसरे वक्ता थे चौ. चांदराम, भूतपूर्व केन्द्रीय ट्रांसपोर्ट मंत्री एवं बाबूजी के बाद अपने आप को दलित समाज का अग्रणी नेता समझने वाले। उन्होंने भी अपने राजनैतिक लहजे में वही बात दोहराई। जब कभी इस देश पर संकट आया तो दलितों ने सरकार और देश की भरपूर हिफाजत की है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी को अब देश के दलित प्रतिनिधियों के हाथों में सौंप देना चाहिए। सत्ता के नजदीक रहकर दलित समाज के बदनाम नेताओं को और अधिक दलाली करने का अवसर मिल सके, शायद इसलिए ही अकादमी के इस सम्मेलन में पूर्व सांसद श्री एस.डी. सिंह चौरसिया को आमंत्रित किया गया और वे आए भी। उन्होंने जी भर कर इंदिरा गांधी और राजीव सरकार के खिलाफ जहर उगला। उनका भाषण यही सोच–समझ कर सबसे अन्त में रखा गया था। उस समय न तो मंच पर भगतजी थे और न ही चांदराम। चौरसिया जी आज से 12–14 वर्ष पूर्व बहुजन समाज पार्टी के इस समय के अध्यक्ष कांशीराम के राजनैतिक गुरु रह चुके हैं। उन्होंने सीधे–सीधे कहा कि अब वक्त आ गया है कि इस देश में दलित, मुस्लिम और पिछड़े वर्गों को ब्राह्मण, बनिया तथा ठाकुरों के खिलाफ अपनी राजनैतिक ताकत का इस्तेमाल करना चाहिए। चौरसिया जी ने साहित्य पर एक शब्द भी नहीं कहा, सिर्फ सरकार तथा सवर्ण हिन्दुओं के विरोध में जमकर अपनी भड़ांस निकाली।

अकादमी के सम्मेलन में दलित लेखक एवं साहित्यकारों के साथ–साथ केन्द्रीय सरकार के भूतपूर्व और वर्तमान उच्च पदाधिकारियों को भी बुलाया गया था। इनमें मुख्य थे प्रकाशन विभाग, भारत सरकार के निदेशक डा. श्यामसिंह शशि, सचिव हरियाणा हाउसिंग बोर्ड, डा. एस.एल. धनी, आई. ए.एस., राजस्थान विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डा. डी.आर. जाटव, प्रसिद्ध मराठी दलित साहित्यकार एवं 'अस्मितादर्श' के संपादक डा. गंगाधर पंतावणे, गुजरात से दलित पैंथर के नेता तथा लेखक व पत्रकार श्री रमेश चन्द्र परमार, दिल्ली के भूतपूर्व निगमायुक्त श्री बी.आर. टम्टा तथा प्रकाशन विभाग में उपनिदेशक रहे और कबीरपंथी धारा से जुड़े चौधरी इन्द्रराज सिंह आदि।

गत वर्ष की तरह ही भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने कुछ पुरस्कार बांटने की परंपरा को इस वर्ष भी बखूबी निभाया। अब अकादमी हर वर्ष पुरस्कार देती है। नेपाल राष्ट्रीय दलित जन विकास परिषद के महामंत्री श्री टी.आर. विश्वकर्मा को 1985–86 का डा. अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया था। 1986–87 का पुरस्कार दक्षिण अफ्रीका के जुझारु अश्वेत नेता डा. नेल्सन मन्डेला के नाम समर्पित किया गया। इसके अलावा डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार भी बहुतों को बांटे गए।

9 अगस्त को अकादमी का दूसरे दिन का सम्मेलन नई दिल्ली, नार्थ एवेन्यू के एम. पी. क्लब में रखा गया। वहां कुछ अन्य राजनीतिज्ञों को भी बुलाया गया जिनमें भूतपूर्व सांसद हीरालाल परमार विशेष थे। 9 अगस्त को परमार जी ने केन्द्रीय मंत्री एच. के. एल. भगत को जी भर कर कोसा। ज्ञात रहे कि पिछले दिनों जब गुजरात में आरक्षण आंदोलन चला था और हीरालाल परमार ने लोकसभा में अपनी बात रखनी चाही थी तो इन्ही भगतजी ने उन्हें पकड़ कर खींचा था। 9 अगस्त के कार्यक्रम में भी साहित्यिकता पर कम वाद–विवाद हुआ, राजनैतिक शैली में उठा–पटक अधिक हुई। अगले दिन प्रधानमंत्री राजीव गांधी से मुलाकात पहले से ही निश्चित थी। अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर ने मुलाकात इसलिए भी रखी होगी कि देखिए राजीव जी हमने कांग्रेस सरकार को मजबूत बनाने के लिए इतना बड़ा मजमा लगाया। अब हमारे लिए भी कुछ कीजिए। इस तरह से भारतीय दलित साहित्य अकादमी का तीसरा सम्मेलन आदि से अंत तक पूरे राजनैतिक माहौल में हुआ जिसमें नगर निगम के चुनाव से लेकर संसद के गलियारों तक पहुंचने के रास्तों के संदर्भ में अधिक वार्तालाप हुआ।

यूं भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना 6 अगस्त 1984 को राजधानी में बाबू जगजीवनराम के कर कमलों द्वारा की गई थी। अकादमी का दूसरा सम्मेलन 26 अप्रैल 1986 को नई दिल्ली के मावलंकर हाल में हुआ था। तब सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री श्री योगेन्द्र मकवाना ने किया था।

आज देश भर में दलित लेखक एवं साहित्यकार अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष कर रहा है। पर दुख है कि वही अस्मिता इस दलित समाज के नेताओं के द्वारा गिरवी रखी जा चुकी है। और सबसे बड़ा खेद का विषय तो यह रहा कि दलित साहित्यकारों के बीच से ही कुछ के मन में राजनैतिक लोलुपता रही। स्थिति यहां तक पहुंची कि दलित साहित्यकारों ने भी अपनी अस्मिता से सौदा कर सुविधा और भोग की राजनीति प्रारंभ की। दलित साहित्य कभी भूखे पेट वालों का साहित्य था। पर अब तो धीरे–धीरे पेट भरो का साहित्य बनता जा रहा है। उसमें आक्रोश और संघर्ष के स्थान पर चाटुकारिता तथा समझौता करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। पूरे देश की बात को अगर कुछ समय के लिए हम भूलकर केवल राजधानी के दलित लेखकों तथा साहित्यकारों की बात करें तो उसमें से अधिकांश ऐसे ही मिलेंगे जिनका उद्देश्य साहित्यिक सृजन न होकर शुद्ध रूप से अपनी राजनैतिक भूख ही मिटाना रहा है। जब–जब ऐसे दलित नेताओं के मन में सत्ता से जुड़ने की बात उपजती है तब–तब वे नेता से साहित्यकार बन बैठते है। साहित्य के माध्यम से शोषितों और दलितों की बात कहना एक अच्छी परम्परा है पर दलित साहित्य के माध्यम से जातिगत विद्वेष को बढ़ाना उतना ही गलत। दलित साहित्य का उद्देश्य राजनैतिक स्वार्थ पूरा करना नहीं अपितु सामाजिक विषमता के विरुद्ध आवाज उठाना है। वह विषमता फिर चाहे दलित समाज में ही क्यूं न हो। उम्मीद है आज का युवा दलित साहित्यकार जातिभेद के पचड़ों में तथा राजनीतिक प्रलोभनों में न फंस कर ईमानदारी से वह सब कुछ लिखेगा जिसकी दलित समाज को आवश्यकता है।

(भाई नैमिशराय जी, अपने गिरेबान में झांकें जहां आप खुद राजनेताओं के तलवे चाटते नजर आयेंगे। – डा. सुमनाक्षर) •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा कार्यालय : बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन, दिल्ली-110009 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936, 9891989175 **Email-sumanakshar@ymail.com, jay.sumanakshar@gmail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009